आनन्दमय जन्मदिवस के एक आम को चुनें

“तुम कहाँ से हो?”

एक बार ग्रीष्म ऋतु के दौरान मेरा मित्र जेरी—जो उस समय सिद्धयोगी नहीं था—श्री मुक्तानन्द आश्रम आया हुआ था और लॉबी में बैठा था, तभी श्रीगुरुमाई वहाँ से जा रही थीं। गुरुमाई जी रुकीं और उन्होंने उसकी ओर देखा।

“तुम कहाँ से हो?” गुरुमाई जी ने पूछा। वे क्षण भर के लिए ही रुकीं और उसके उत्तर देने से पहले ही आगे बढ़ गईं।

कुछ दिनों बाद जब जेरी स्कूल जाने के लिए आश्रम से अपने घर गया तो अपने साथ श्रीगुरुमाई के उन शब्दों को भी ले गया, “तुम कहाँ से हो?”

जेरी के पिता का जब देहावसान हुआ था तब जेरी काफ़ी छोटा था और कई वर्षों तक वह अपने पिता के परिवार की तरफ़ के नाते-रिश्तेदारों से दूर रहा था। यह प्रश्न, “तुम कहाँ से हो?” जेरी के मन में गूँज रहा था, इसलिए उसने अपने पिता के परिवार के बारे में पता लगाने का निश्चय किया। जेरी नहीं जानता था कि वह उन्हें कहाँ ढूँढ़े, इसलिए उसने इन्टरनेट की मदद से अपनी खोज शुरू की। उसे अपनी पुरानी धुँधली यादों में, अपनी बुआ का नाम याद था। उसने उन्हें ऑनलाइन ढूँढ़ने का प्रयास किया और यह क्या, उसे एक सूची मिली जिसमें उनके नाम से मिलता-जुलता एक नाम लिखा था! और इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि उस व्यक्ति का जो पता बताया गया था वह उसके घर से इतना नज़दीक था कि पैदल चलकर वहाँ पहुँचा जा सके! तो जेरी अपनी बुआ के घर चल दिया।

उसे कुछ घबराहट-सी महसूस हो रही थी कि कहीं उसकी बुआ उसे वापस जाने को न कह दे। जब उसने दरवाज़े पर दस्तक दी तो एक अधेड़ उम्र की महिला ने दरवाज़ा खोला। जेरी ने कहा, “नमस्ते, मैं आपका भतीजा हूँ।” उसने अपनाए न जाने के लिए खुद को तैयार कर लिया था। परन्तु, इसके बजाय उसकी बुआ ने अपनी बाहें फैलाकर उसका स्वागत किया और इतनी ज़ोर-से गले लगाया कि वह बस गिरते-गिरते बचा। उन्होंने कहा, “हे भगवान! हे भगवान! हम तुम्हें बचपन से ढूँढ़ रहे हैं! कहाँ थे तुम?”

घर के अन्दर, जेरी की बुआ ने हर तरफ़ उसके बचपन की तस्वीरें लगा रखी थीं। वे दोनों आपस में बात करते रहे; उसकी बुआ रोती जा रही थीं—और जेरी भी रोता जा रहा था।

"तुमने हमें कैसे ढूँढ़ा?" उन्होंने पूछा।

जेरी ने उन्हें अपनी कहानी सुनाई : "भारत की एक गुरु जिनका नाम गुरुमाई है, उन्होंने मुझसे पूछा था कि मैं कहाँ से आया हूँ, इसलिए मैंने ढूँढ़ना आरम्भ किया और मैं यहाँ तक आ पहुँचा।"

उसकी बुआ उठीं, कमरे से बाहर गईं और अपने हाथ में एक सी.डी. लेकर वापस आईं। उन्होंने आदर व श्रद्धा भरे स्वर में समझाया कि यह सी.डी.—श्रीगुरुमाई के साथ मन्त्र 'ॐ नमः शिवाय' के संकीर्तन की रिकॉर्डिंग है जो उन्हें उनकी एक सहेली ने दी थी।

"मैं इसे बहुत सुनती हूँ," उन्होंने बताया, "इससे मुझे शान्ति मिलती है, मुझे इसे सुनकर बहुत अच्छा लगता है।"

श्रीगुरुमाई के सामान्य से प्रतीत होने वाले प्रश्न, "तुम कहाँ से हो?" ने जेरी के जीवन को हमेशा के लिए बदल दिया।

परात्परतरं ध्येयं नित्यमानन्दकारकम्।
हृदयाकाशमध्यस्थं शुद्धस्फटिकसन्निभम्॥

उन श्रीगुरुदेव का ध्यान करना चाहिए जो परात्पर हैं अर्थात् जिनसे बढ़कर कोई नहीं है,
जो नित्य आनन्द प्रदान करने वाले हैं, जो शुद्ध स्फटिक के समान निर्मल हैं
और जो हृदयाकाश के मध्य स्थित हैं।

श्रीगुरुगीता, श्लोक ११३

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं
ज्ञानस्वरूपं निजबोधयुक्तम्।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं
श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि॥

मैं उन श्रीगुरु को नित्य नमस्कार करता हूँ जो आनन्दस्वरूप हैं, आनन्दप्रदाता हैं, प्रसन्न हैं।
ज्ञान ही उनका स्वरूप है और वे आत्मबोधयुक्त हैं।
वे योगीश्वर हैं तथा स्तुति करने योग्य हैं। वे संसाररूपी रोग के वैद्य हैं।

श्रीगुरुगीता, श्लोक ९३

अब मैंने चमत्कार को जाना

प्रिय गुरुमाई जी,

आपको बहुत, बहुत धन्यवाद, श्री मुक्तानन्द आश्रम में बिताए मेरे अद्भुत व रूपान्तरणकारी सप्ताह के लिए! मैं मिशिगन के ऐन अर्बर शहर से अपनी बेटी के साथ आया था और यह अनुभव हम दोनों के लिए अत्यन्त गहन रहा। ऐन अर्बर वापस जाते समय हम दोनों पाँच घण्टे तक लगातार अपने सुन्दर अनुभव के बारे में बातें करते रहे और यह योजना बनाते रहे कि हम सही मायने में आश्रम को अपने साथ अपने घर किस तरह ले जा सकते हैं।

अगली सुबह जब मैं अपने कुत्ते को घुमाने घर से बाहर निकला, मैंने सुबह के उजाले में अपने वृक्षों की सुन्दरता को देखा और मेरी आँखों में आँसू आ गए। मुझे एहसास हुआ कि मैं किस तरह अपने आस-पास के चमत्कारों से अनजान, अपना जीवन व्यतीत कर रहा था। वापस आने के बाद ऐसे कई छोटे-छोटे प्रसंग मेरे सामने आए। यह स्पष्ट है कि आश्रम में मैंने जो समय बिताया, उससे मेरे अन्तर की गहराई में कुछ परिवर्तित हो गया है। इस यात्रा से पहले, मैं व्याकुल व तनावग्रस्त महसूस कर रहा था; आश्रम-यात्रा के बाद, मुझे महसूस हुआ कि मैं अचानक धूल की उन मोटी परतों से मुक्त हो गया हूँ जिन्होंने मेरे हृदय को ढँक रखा था।

अब मेरी पत्नी और मैंने, एक सिद्धयोग अभ्यास करने के लिए रोज़ आधा घण्टा या उससे अधिक समय निर्धारित कर लिया है। हम जानते हैं कि यह एक तरीक़ा है, आश्रम में बिताए गए समय का सम्मान करने और सच्चे अर्थों में आश्रम को घर लाने का।

धन्यवाद, मुझे बार-बार अपने घर, अपनी अन्तरतम आत्मा की ओर लाने के लिए।

गहन कृतज्ञता व प्रेम के साथ,
मिशिगन, अमरीका से एक सिद्धयोगी

यत्सत्येन जगत्सत्यं यत्प्रकाशेन भाति तत्।
यदानन्देन नन्दन्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

उन श्रीगुरु को नमस्कार है जिनके सत्य से जगत सत्य है जिनके प्रकाश से यह प्रकाशित होता है और जिनके आनन्द से सब आनन्दित होते हैं।

श्रीगुरुगीता, श्लोक ३६

आनंदाचे डोही

ऑडिओ रिकॉर्डिंग :
संगीत-रचना व गायन : गुरुमाई चिद्विलासानन्द
©℗ १९९७ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।
ऑडिओ की अवधि : २:५६ मिनट

आनन्द की महाबाढ़ में
तरंगें उठ रही हैं,
और वे भी आनन्द ही हैं,

क्योंकि आनन्द की इस देह के
हर कण का स्वरूप आनन्द है।

यह है मेरी स्थिति।
मैं शब्दों में इस आनन्द का वर्णन कैसे कर सकता हूँ?
अन्तर-आनन्द में मैं इतना तल्लीन हो गया हूँ
कि इन्द्रियों द्वारा
बाह्य जगत में
सुख की खोज की कल्पना भी नहीं कर सकता।

जिस तरह जब एक शिशु
माँ के गर्भ में होता है,
तो शिशु की लालसाएँ माँ में झलकती हैं
और माँ की इच्छाएँ बन जाती हैं,

तुकाराम महाराज कहते हैं, ठीक वैसे ही,
यह आनन्द मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व में झलक रहा है,
और मेरे मुख से जो कुछ भी निकलता है
उसी आनन्दानुभव की
अभिव्यक्ति है।

स्फटिकप्रतिमारूपं दृश्यते दर्पणे यथा।
तथात्मनि चिदाकारम् आनन्दं सोऽहमित्युत॥

जैसे दर्पण में शुद्ध स्फटिक की प्रतिमा दिखाई देती है, वैसे ही आनन्द जो कि चिति ही है, आत्मा में प्रतिबिम्बित होता है और 'सोऽहम्' ["निस्सन्देह, 'वह' मैं हूँ"] का बोध प्रकट होता है।

श्रीगुरुगीता, श्लोक ११४

युवा सिद्धयोगियों द्वारा गुरुमाई जी के प्रति अपने प्रेम की अभिव्यक्तियाँ

बच्चों द्वारा बनाए गए दो चित्र :

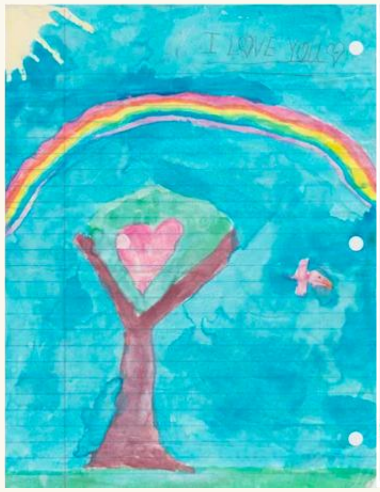

गुरुमाई जी मुझसे बहुत प्यार करती हैं

प्रिय गुरुमाई जी,

आप जैसी श्रीगुरु के साथ सिद्धयोग पथ पर होने का सुअवसर प्राप्त होना, आप जैसी श्रीगुरु के मार्गदर्शन में एक सिद्धयोग विद्यार्थी होना, एक स्वर्णिम हृदय का विकास करना है। और मैं जानती हूँ कि एक स्वर्णिम हृदय होना, जीने का सबसे सुन्दर और शुद्ध तरीक़ा है। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

एक दिन आप चाहती थीं कि मेरे बेटे को, जो कि उस समय चार वर्ष का था, कुकीज़ का एक बॉक्स मिले। आपने मुझसे कुकीज़ चुनने के लिए कहा था। कमरे से बाहर जाते समय आपने कहा, “मैं हमेशा तुम्हारे बेटे के बारे में सोचती हूँ।” चलते-चलते आपने कहा, “क्योंकि वह मुझे पसन्द है।” फिर आप मुस्कराते हुए मेरी ओर मुड़ीं और मुझसे पूछा, “क्या वह तुम्हें पसन्द है?”

इस बारे में विचार करने पर मुझे समझ में आया कि यद्यपि मैं अपने बेटे से बहुत प्यार करती हूँ, कभी-कभी मैं उसके प्रति अपने प्रेम को प्रकट नहीं करती। ☹ जैसे ही मेरे मन में यह विचार आया, मेरे हृदय में उसके प्रति ढेर सारा प्रेम उमड़ने लगा। कुछ दिनों बाद जब वह रिश्तेदारों के घर से घूमकर वापस आया, तो मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वह कितना प्यारा लग रहा है! मैं सचमुच उसे पसन्द करती हूँ! मुझे उसे प्यार करने पर बहुत ख़ुशी, प्रसन्नता और उसे पसन्द करने से उसके लिए और भी प्रेम का अनुभव हो रहा था। ☺ और उसने भी उतने ही सकारात्मक भाव से प्रत्युत्तर दिया! मैंने महसूस किया कि उसके प्रति अपने स्नेह को प्रकट करने से, खुले हृदय के साथ जीवन जीने का द्वार खुल जाता है; संसार को उस नज़रिए से देखने व अनुभव करने का द्वार खुल जाता है, जैसा कि भगवान ने इसे बनाया है।

प्रिय गुरुमाई जी, आप जिन दृश्य व अदृश्य तरीक़ों से हमें सिखाती हैं और अपना मार्गदर्शन व प्रेम हमें प्रदान करती हैं उस सबके के लिए धन्यवाद।

ढेर सारे प्रेम व कृतज्ञता के साथ,

डेगेन्डॉर्फ़, जर्मनी से एक सिद्धयोगी

उपलेख : जब मैंने अपने बेटे को कुकीज़ दीं, तो उसने वही कहा जो वह आपसे कुकीज़ मिलने पर हमेशा कहता है, “गुरुमाई जी इन्हें मेरे लिए बनाने के लिए रात भर जागी हैं, क्योंकि गुरुमाई जी मुझसे बहुत प्यार करती हैं।”

आत्मविश्वास!

प्रिय गुरुमाई जी,

धन्यवाद, आपने युवा साधकों के लिए प्रशिक्षण आरम्भ किया। मैं वास्तव में हर उस चीज़ की सराहना करने लगी हूँ जो एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन करता है। मुझे बहुत कृतज्ञता महसूस होती है कि मुझे फ़ाउन्डेशन के बारे में इतना सब कुछ सीखने व सिद्धयोग मिशन ब्रीफ़िंग का अध्ययन करने हेतु यह अवसर प्राप्त हुआ है।

मुझे ब्रीफ़िंग के दौरान हुई चर्चाएँ और प्रशिक्षण ले रहे युवा साधकों द्वारा की गई लघु-नाटिकाएँ बहुत अच्छी लगीं; इनसे हमें ब्रीफ़िंग के विषयों को पूरी तरह समझने व उसे स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में सहायता मिली। प्रशिक्षण का उद्देश्य पूर्ण हुआ।

मैं आपको यह बताना चाहती हूँ कि कन्सास शहर वापस आना और अपनी नई समझ को व मैंने जो सीखा है, उसे अपने दैनिक जीवन में इतनी जल्दी लागू करना मेरे लिए कितना आनन्ददायक रहा है। पहली बार मैंने अपने अन्दर इतने आत्मविश्वास व सामर्थ्य को महसूस किया कि मैं अपनी एक निकटतम मित्र को, जोकि सिद्धयोगी नहीं है, पूरी तरह यह समझा सकूँ कि सिद्धयोग पथ मेरे लिए क्या है। इतना ही नहीं, हमारे बीच इतनी दिलचस्प बातचीत हुई कि रात होते-होते उसने मुझसे पूछा कि क्या वह आपके द्वारा लिखित एक पुस्तक, *The Yoga of Discipline* मुझसे पढ़ने के लिए ले सकती है। मैंने सिद्धयोग सिखावनियों के बारे में उसे जो बताया उसने, उसके अन्दर कौतूहल का भाव जगा दिया।

जीवन कितना विलक्षण और अद्भुत है, और मेरा जीवन अधिकाधिक बेहतर ही होता जा रहा है!
बहुत-बहुत धन्यवाद!

सदैव प्रेम के साथ,

अमरीका से एक सिद्धयोगी

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि॥

मैं उन सद्गुरु को नमस्कार करता हूँ जो ब्रह्मानन्दस्वरूप हैं, परमसुखदाता हैं, केवल ज्ञानस्वरूप हैं।
वे द्वन्द्व के परे हैं, गगन के सदृश सर्वव्यापी हैं, और 'तत्त्वमसि' आदि वाक्यों के लक्ष्य हैं।
वे एक हैं, वे नित्य हैं, वे विमल हैं, वे अचल हैं। वे सर्व प्राणियों की बुद्धि के साक्षी हैं,
वे भावातीत हैं और तीनों गुणों से रहित हैं।

श्रीगुरुगीता, श्लोक ८९

सुख की घण्टी

प्रिय गुरुमाई जी,

ग्यारह वर्ष पहले आपने अपने जन्मदिवस पर हर एक को एक "सुख की घण्टी" दी थी। मैं आपको यह बताना चाहती हूँ कि इन वर्षों में यह घण्टी मेरे जीवन में कितनी महत्त्वपूर्ण रही है।

मुझे याद है कि आपने स्वामी वासुदेवानन्द जी से हम सबको यह सिखाने के लिए कहा था कि हम इस घण्टी का उपयोग कैसे करें। उन्होंने कहा था, "इसे बजाएँ, मन्त्र कहें और एक इच्छा या प्रार्थना करें।" मैंने ग्यारह वर्षों से लगभग हर रोज़ ऐसा ही किया है। यह घण्टी मेरे पूजा-स्थान पर विराजमान है, उस पर अब भी सुन्दर पीला धागा बँधा है और मैं अपने सुबह के अभ्यास के एक भाग के रूप में इसे बजाती हूँ।

कुछ वर्षों तक, घण्टी बजाते समय मैं एक इच्छा या प्रार्थना करती थी। फिर, जब आपने हमें एक संकल्प बनाना सिखाया, तब मैंने घण्टी बजाने के साथ अपने संकल्प पर ध्यान केन्द्रित करना आरम्भ कर दिया; मैं हर दिन के लिए एक विशेष संकल्प बनाया करती थी। उसके बाद दो वर्षों तक, मैं अपनी आँखें बन्द किया करती और कहा करती, "आज के लिए मेरी इच्छा है, श्रीगुरु का . . . " और प्रार्थना करती कि आपका एक विशेष गुण उस दिन मेरे अन्तर में उदित हो। जैसे कि श्रीगुरु की परादृष्टि, श्रीगुरु का स्नेह व प्रेम, श्रीगुरु की स्पष्टता, श्रीगुरु की हँसी।

अपने हृदय की गहराई से, मैं आपकी कृपा के चमत्कार के लिए आपको धन्यवाद देती हूँ। और अब, जब हम एक और जन्मदिवस की ओर बढ़ रहे हैं—हम दोनों ही, क्योंकि २४ जून को मेरा जन्मदिवस भी है—मैं गहन कृतज्ञता से आपके चरणों में शत-शत नमन करती हूँ।

सर्वदा प्रेम व समर्पण के साथ,
न्यूयॉर्क, अमरीका से एक सिद्धयोगी

आवडली गुरुमाय

ऑडिओ रिकॉर्डिंग

गायन : शाम्भवी क्रिश्चन

©℗ १९९५ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

ऑडिओ की अवधि : १: ५८ मिनट

अपने पूरे हृदय से मैं गुरुमाई जी की पूजा करता हूँ।
समस्त धन-दौलत की खोज में जीवन बिताना तुच्छ लगता है।
यहाँ तक कि,
मन की परेशानियों व भावनाओं में अटके रहना भी समय को व्यर्थ गँवाना है।

इससे कहीं बेहतर होता है
भगवन्नाम का स्मरण करते रहना
और उसी में डूबे रहना।
मुझे दृढ़ विश्वास हो गया है कि
यही एकमात्र उपाय है।

सन्तों की संगति बिना,
मनुष्य के लिए, भवसागर पार करने का अन्य कोई उपाय नहीं है।
इसीलिए मेरा मन उनकी तरफ़ इतना खिंच गया है।

तुकड्यादास को एक बात पर दृढ़ विश्वास है :
गुरु से मिलने के अलावा
किसी के लिए अन्य कोई आस नहीं है।

सन्त-कवि तुकड्यादास

पशु-पक्षियों के जगत से अभिवादन

कुछ वर्ष पूर्व, वॉशिंग्टन के सिएटल शहर में श्रीगुरुमाई की एक टीचिंग्स् विज़िट के दौरान, एक समुद्री चिड़िया रोज़ाना गुरुमाई जी की खिड़की पर आती और खिड़की के काँच पर बैठकर आवाज़ करते हुए अभिवादन करती।

श्रीगुरुमाई जहाँ भी जाती हैं, वहाँ के पशु-पक्षी उनका अभिनन्दन करते हैं।

कभी यह एक मैत्रीपूर्ण कुत्ता होता है जो गुरुमाई जी से उनके टहलने के दौरान मिलता है और फिर हर रोज़ वापस आने लगता है, अक्सर अपने एक या दो मित्रों के साथ—जो पूरी निष्ठा के साथ श्रीगुरुमाई के द्वार पर उनकी प्रतीक्षा करते हैं।

ऑस्ट्रेलिया के सिडनी शहर में श्रीगुरुमाई की एक टीचिंग्स् विज़िट के दौरान, एक सुबह एक प्यारा-सा छोटा तोता उड़कर कुछ खाने के लिए खिड़की पर आया। श्रीगुरुमाई की सिडनी की शेष यात्रा के दौरान वह नन्हा पक्षी उनके घर पर ही रहा। उसे श्रीगुरुमाई के कन्धे पर बैठना और उनके लिए गाना बहुत पसन्द था।

श्वेताम्बरं श्वेतविलेपपुष्पं
मुक्ताविभूषं मुदितं द्विनेत्रम्।
वामाङ्कपीठस्थितदिव्यशक्तिं
मन्दस्मितं सान्द्रकृपानिधानम्॥

श्वेत वस्त्र, श्वेत विलेपन और श्वेत पुष्पों को धारण किए हुए,
मोतियों से अलंकृत, आनन्दपूर्ण, दो नेत्र वाले, जिनकी वामांक पीठिका पर दिव्य शक्ति विराजमान हैं,
मन्द मुस्कानयुक्त, प्रगाढ़ कृपा के आगार गुरुदेव का ध्यान करना चाहिए।

श्रीगुरुगीता, श्लोक ९२

मैं आपके साथ नृत्य कर रही हूँ

एक चित्र जिस पर यह लिखा है :

मैं आपके साथ नृत्य कर रही हूँ
जन्मदिवस की शुभकामनाएँ गुरुमाई जी!
बहुत-बहुत प्रेम

न्यूयॉर्क, अमरीका से एक सिद्धयोगी

आपकी नृत्य शैली

प्रिय गुरुमाई जी,

धन्यवाद गुरुमाई जी, आज नववर्ष २०११ की इस पूर्वसन्ध्या पर, हमारे साथ गाने व नृत्य करने के लिए।

आप बहुत सुन्दर हैं, गुरुमाई जी। आपको इतने गरिमापूर्ण तरीक़े से, इतनी सहजता व इतनी रचनात्मकता के साथ नृत्य करते देखना किसी भी प्रशिक्षित नृत्य प्रदर्शन को देखने से कहीं बढ़कर है, क्योंकि मेरी परमप्रिय गुरुमाई जी, आपका नृत्य ब्रह्माण्ड का 'दिव्य नृत्य' है।

धन्यवाद।

सदैव प्रेम,

न्यूयॉर्क, अमरीका से एक सिद्धयोगी

हृदय की सफ़ाई करो

प्रिय गुरुमाई जी,

रविवार सुबह आपने श्री मुक्तानन्द आश्रम के हर कोने को साफ़ रखने के महत्त्व के बारे में बताया। आपने कहा कि हमें साफ़-सफ़ाई का केवल दिखावा भर नहीं करना है। जब मैंने इस बात पर मनन-चिन्तन किया तो मुझे यह बात और भी अच्छी तरह से व स्पष्टता से समझ में आने लगी—यदि सफ़ाई का उद्देश्य बाहरी दिखावे से कहीं अधिक होता है तो केवल उन्हीं स्थानों को क्यों साफ़ करना जिन्हें लोग अकसर देखते हैं?

आपके प्रवचन के कुछ घण्टों बाद ही, सौभाग्यवश मुझे आपके आदेश की सीधे पूर्ति करने का अवसर मिल गया। दोपहर को मैंने, दो अन्य सिद्धयोगियों के साथ अनुग्रह बिल्डिंग में ध्यान गुफा के पास स्थित दो स्टोरेज स्पेसेस को साफ़ किया। मैंने रगड़कर साफ़ किया, झाड़ू लगाई, पोछा लगाया, वेक्यूम क्लीनर से साफ़ किया, दीवारें धोईं और जाले हटाए।

दो घण्टों के कम समय में हम तीनों ने उन दो अँधेरे, घुटन व धूल से भरे कमरों को खुले, स्वच्छ और मनमोहक स्थान में पूरी तरह रूपान्तरित कर दिया। कमरों को साफ़ करने का काम न तो कठिन था और न ही उबाऊ। ऐसा लग रहा था मानो यह बाबा जी की इस सिखावनी का प्रतिबिम्ब है, "झाड़ू लेकर अपने हृदय की सफ़ाई करो।" गुरुमाई जी आप सतत हमें यह सिखाती हैं कि हम अपने अन्दर की महानता और स्वर्णिम सद्‌गुणों को दीप्तिमान होने दें, उन्हें बाहर प्रकट होने दें।

धन्यवाद गुरुमाई जी, उस सबके लिए जो आप हमें सिखाती हैं।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ!

मैं आपसे प्रेम करता हूँ,
न्यूयॉर्क, अमरीका से एक सिद्धयोगी

सकलभुवनसृष्टिः कल्पिताशेषपुष्टिर्
निखिलनिगमदृष्टिः सम्पदां व्यर्थदृष्टिः।
अवगुणपरिमार्ष्टिस्तत्पदार्थैक दृष्टिर्
भवगुणपरमेष्टिर्मोक्षमार्गैक दृष्टिः॥

सकलभुवनरङ्गस्थापनास्तम्भयष्टिः
सकरुणरसवृष्टिस्तत्त्वमालासमष्टिः।
सकलसमयसृष्टिः सच्चिदानन्ददृष्टिर्
निवसतु मयि नित्यं श्रीगुरोर्दिव्यदृष्टिः॥

सम्पूर्ण लोकों का सृजन करने वाली, समस्त पदार्थों की पुष्टि करने वाली, सकल शास्त्रों में पकड़ रखने वाली, सम्पदाओं को व्यर्थ मानने वाली, अवगुणों का परिमार्जन करने वाली, 'तत्' सत्ता में ही एकदृष्टि रखने वाली, संसार के गुणों की विधायिका, मोक्ष मार्ग पर ही जिसकी दृष्टि टिकी हुई है, समस्त लोकों के रंगमंच की स्थापना के लिए जो आधारभूत स्तम्भ के समान है, जो करुणा रस की वर्षा करती है, जो छत्तीस तत्त्वों की समष्टिरूप माला के समान है, जिससे समस्त नीति-नियमों अथवा काल की रचना होती है, जो सच्चिदानन्द स्वरूप है— ऐसी श्रीगुरुदेव की दिव्य दृष्टि सदा मेरे ऊपर रहे।

श्रीगुरुगीता, श्लोक ५९ व ६०

नित्यं शुद्धं निराभासं निराकारं निरञ्जनम्।
नित्यबोधं चिदानन्दं गुरुं ब्रह्म नमाम्यहम्॥

नित्य, शुद्ध, आभासरहित, निराकार, निरंजन, नित्यबोधस्वरूप, चिदानन्दस्वरूप,
परब्रह्म गुरुदेव को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्रीगुरुगीता, श्लोक ९०

प्रकृति का मन्दिर

श्रीगुरुमाई की मेक्सिको की एक टीचिंग्स् विज़िट के दौरान, वहाँ के साधकों ने गुरुमाई जी को कूएर्नावाका शहर के पास टेपोज़्टेको के प्राचीन एज़्टिक तीर्थ-स्थल आने के लिए आमन्त्रित किया। टेपोज़्टेको का मन्दिर पहाड़ के एक ओर की ऊँची समतल भूमि पर स्थित है और वहाँ जंगल के बीच से होकर गुज़रते खड़ी चढ़ाई वाले संकीर्ण मार्ग पर चलकर ही पहुँचा जा सकता है।

मन्दिर पर श्रीगुरुमाई का स्वागत करने के लिए कई भक्तगण उनसे पहले ही आगे चले गए थे। मार्ग पर ऊपर की ओर चढ़ते हुए गुरुमाई जी दूर से ही उन्हें देख पा रही थीं जो चट्टान के किनारे से झाँककर उन्हें चढ़ता हुआ देख रहे थे। गुरुमाई जी ने उनकी ओर देखकर 'ॐ नमः शिवाय' गाना आरम्भ कर दिया। भक्तों ने भी प्रसन्नतापूर्वक 'ॐ नमः शिवाय' गाकर प्रत्युत्तर दिया। मन्त्र की ध्वनि सुनकर, गुरुमाई जी से आगे चल रहे भक्तों ने छोटी पर्चियों पर 'ॐ नमः शिवाय' लिखना और उन्हें पत्तियों की तरह वृक्षों पर सजाना शुरू कर दिया जिससे श्रीगुरुमाई व उनके साथ चल रहे अन्य आरोही उन्हें ढूँढ़ सकें।

शीघ्र ही श्रीगुरु व शिष्यों के बीच 'ॐ नमः शिवाय' के यह परस्पर स्वर पर्वत की ढलान पर नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे की ओर गूँजने लगे, प्रकृति के हरे-भरे मन्दिर का वातावरण इस मनोरम संकीर्तन से आच्छादित हो रहा था।

मेक्सिको से एक सिद्धयोगी

अपना प्रश्न चन्द्रमा से पूछो

महाराष्ट्र के ठाणे शहर में रहने वाले एक दम्पति अकसर सेवा अर्पित करने हेतु गुरुदेव सिद्धपीठ आया करते थे। उनका पाँच वर्ष का बेटा भी हमेशा उनके साथ आता था।

एक दिन उस बालक ने श्रीगुरुमाई से बात करते-करते कहा, "यदि मैं आपके साथ नहीं हूँ और मुझे आपसे कुछ पूछना हो तो मैं क्या करूँ?"

गुरुमाई जी ने उत्तर दिया, "अगर ऐसा हो तो जाकर चन्द्रमा को देखना, मुझसे अपना प्रश्न पूछना, मैं तुम्हारा प्रश्न सुन लूँगी।" कुछ दिनों बाद एक रात जब वह बालक घर पर था तब उसने अपनी माँ से कहा कि उसे गुरुमाई जी से बात करनी है।

उसकी माँ ने कहा, "तुम्हें याद है गुरुमाई जी ने क्या कहा था?"

उसने सिर हिलाकर हामी भरी और फिर घर से बाहर जाकर चन्द्रमा की ओर देखने लगा। कुछ ही क्षणों के बाद घर पर फ़ोन की घण्टी बजी। जब उसकी माँ ने फ़ोन उठाया, तब उन्हें गुरुमाई जी की आवाज़ सुनाई दी।

गुरुमाई जी ने कहा, "अपने बेटे से कहो कि मैंने उसका प्रश्न सुन लिया है।"

ठाणे, भारत से एक सिद्धयोगी

ॐ

ॐ की छवि :

धन्यवाद!

आपका धन्यवाद
गुरुदेव सिद्धपीठ के प्रांगण की यात्रा करने
और
आनन्दमय जन्मदिवस के आमों का रसास्वादन करने के लिए।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।